कलयुग का निःकलंक अवतार

कलियुग में सतयुग आगमन,

निःकलंक अवतार ।

माता-पिता से प्रकट नहि,

आतमघट पर धार ।।

यही धार अवतार है,

निःकलंक यह होय ।

प्रकट कभी होती नहीं,

व्यापक सर्व ही होय ।।

प्रकट आत्मघट होत है,

धार प्रकट नहि होय ।

केवल मन सन्मुख किये,

प्रकट आत्मघट होय ।।

जैसे प्रकट हो आत्मघट,

धार, आत्मघट एक ।

कलयुग का अवतार यह,

निःकलंक यही एक ।।

सतगुरु पंथ को धार कर,

मन सन्मुख करि लेव ।

तुरतै परगट आत्मघट,

धार तुरत लखि लेव ।।

लक्ष्य यही है जीव का,

मन पूरण करि लेव ।

जीव, आत्मा एक करि,

“ सतगुरु पद ” गहि लेव ।।

हर मनुष्य में प्रकट हो,

आतमघट पर धार ।

सतगुरु पंथ का लक्ष्य यह,

निःकलंक अवतार ।।

यही नाम, यही धार है,

यही सतयुग, सतलोक ।

जीव अंश है इसी का,

चेतन, सत्य, अलोक ।।

मोक्ष, मुक्ति, मन पूर्ण कर,

सुमति, विवेक, विदेह ।

सतगुरु पंथ को धार कर,

सभी पार करो देंह ।।

अवतार कैसे लेते है,

भेद यह तुम जान लो ।

आत्मघट होता है परगट,

इसको सुरत के कान दो ।।

आत्मघट परगट हो जिसमें,

पूरण पुरुष उसको कहें ।

घोर कलयुग में इसी से,

“ जीव ” का उद्धार हो ।।

जब तक तुम कुछ कर रहे,

परगट कभी होता नहीं ।

सब बताते, सब कहें,

निरबल के बल एक राम हैं ।।

शिव के ऊपर घट है निर्मित,

घट के ऊपर धार है ।

धार है शिव जटा के ऊपर,

कल्कि का अवतार है ।।

है जगाना जीव को,

घट को जगाना लक्ष्य है ।

उद्धार जीवों का इसी से,

सारों का यह सार है ।।

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)